

‘हमरा पितामहकेँ एक टा छत्ता छलनि । ई आठ कमानीवला जे एखन देखैत छिऐक से छाता थिकैक ।’ छत्तामे सोड़ह गोट कमानी होइत छलैक । हमरा बाबाजीकेँ छत्ता रहनि, छाता नहि । जेना गोबरछत्ता उतार होइत अछि तहिना उतार । सोड़ह गोट कमानी, एक टा कमानी तीन हाथक । सोड़हो टा मिलाकऽ सोड़ह तिया अठतालिस हाथ । तीलमे पक्की तीन सेर । इस्पात सन मजगूत स्टोलक कमानी आ ताहि कमानीपर सोनाक पानि चढ़ाओल । चम चम करैत । एखनो जँ ओहि सोनक पानिकेँ बुधियारीसँ काछि लेल जाइक तँ हू भरिसोन बहार भऽ सकैत अछि । प्रत्येक कमानीक नोकपर जे छक सन गोलका भुटका होइत छैक से शुद्ध चानीक आ प्रत्येक भुटकामे लाल, हीरा, नीलम आ पोखराजक कुत्ती सभ जड़ल छैक । जखन लोहोपर सोनक पानि चढ़ाओल छैक तखन चानीपर कोना नहि होयतैक ?’

रेलगाड़ी अपना गतिथेँ ससरल जा रहल छल । स्वतन्त्रताक पूर्णतः उपयोग करैत जेना चल जाइत हो । अपन राज, अपन मर्जी, अपन विचार, अपन धनि । जेना कोनो अगुताइ नहि । भेल तँ, निर्मलीसँ धरि अयबाक छैक । हमहूँ मोन मारिये कऽ बैसल छलहुँ । फल्लौं बाबूक मुहँ एहि अद्भुत छाताक . . अहा हा ! छाता नहि, छत्ताक अद्भुत वर्णन मुनि अद्भुत रसक आस्वादन करैत चल जा रहल छलहुँ ।

‘ओहि छत्तामे डंटी जे लागल छैक से शुद्ध चानीक । पालिस कयल । हाथ देला उत्तर वृजना जाइत छैक जे संगमर्मरपर हाथ फेरि रहल छी । ओकर मकुआवला मूठ जे छलैक से अनमन हुँतक गर्दन । ओहिना मुँहपर हंसक मूडी बनाओल । लोल सोनक आ आँखि दुनू नीलम आ लोल-पर दू टा हीरा जड़ल, माथपर एक टा पैघ सन पोखराज । डंटी नमतीमे साड़े चारि हाथ, ताहिपर शुद्ध कश्मीरी कारी रेशमक दू बाँट कऽ बाँटल सूतसँ बूनल कपड़ा । ताहि कपड़ापर कथीक पोत थिकैक से नहि जानि । जेना तेल लगाओल देहपरसँ नि छुँवैत छैक, ओहि छत्ता परम नि छलैत छैक ।

## गोबरछत्ता श्रीचन्द्रनाथ मिश्र ‘अमा’

‘टू पाइ आर अर्थात्  $2 \times \frac{22}{7} \times R$  एक टा फार्मुला छैक ताहि फार्मुलाक अनुसार १८.८ हाथ ओहि छत्ताक परिधि छैक । तनला उत्तर नौ आदमी पानिसँ आ अठारह आदमी रोदसँ ओहि तरमे बाँचि सकैत अछि । एक तरहेँ छोटछिन समियाना अथवा तम्बू सँह भऽ जाइत छैक । दुइये अवसरपर ई तानल जाइत छलैक । एक तँ जखन विजयादशमी दिन हमर बाबाजी गढ़ तोड़ जाइत छलथिन आ दोसर जखन सिमरिया घाट जाइत छलथिन ।

‘कातिक आ बैसाखकेँ पुण्यमास कहैत छैक । प्रत्येक वर्ष एहि दुनू मासमे हमर बाबाजी सिमरियामे मास करबे करथिन । गंगा कातमे स्नान कयलाक बाद गंगाक तीरेमे बैसि सन्ध्या-तर्पण, पूजापाठ, जप-तप करैत छलथिन ।

‘विजया दशमी दिन दन्तरवा पट्टा हाथीपर हौदा कसल जाइत छलैक आ हौदापर, पाछामे, ठंढुनिया मारिकऽ बैसल दू गोट खबास एहि छत्ताकेँ तानि कऽ बैसल रहैत छलनि । आ गंगाक तीरपर पूजापरक उपर-सहकिया आ दोसर फुलतोड़ा ई दुनू ब्राह्मण एहि छत्ताकेँ तानिकऽ चक्की-माली भऽ बैसल रहैत छलथिन ।

‘एक बेर तेहने इमर्जेंसी माने नितान्त आवश्यकता पड़ि गेल जे एहि ऐतिहासिक छत्ताक मूठ बेचि लेबऽ पड़ल । अहाँक पिता हमरा संगहि छलाह । इमर्जेंसी ई जे हमरा वाइफ माने बहुआसिनकेँ क्लाइमेट चेंज करबाक माने हावापानी बदल-बाक प्रयोजन पड़ि गेलनि । हमर फेमिली डाक्टर रहथि डाक्टर सुनील-चन्द्र सेन माने डाक्टर एस. सी. सेन, ओल्ड एम. बी. बी. एस. । ओ हमरा वाइफकेँ क्लाइमेट चेंज करबाक एडभाइस माने परामर्श देलथिन ।

हुनका असलमे कल्याणक योग्यता माने प्रेगिनेंसी रहनि आ बिना क्लाइमेट बदलने सोझे लाइफपर डेंजर माने जानपर खतरा रहनि ।

‘कहबी छैक, जान तँ जहान । साधारणो जानक दाम लोक लाख टाका लगबैत छैक आ ओ हमरे वाइफ छलीह तेँ ताहीसँ दामक अटकर लगा सकैत छी । हमरा जनैत तँ बड़ थोड़ तँ दस गुन राखू । माने दस लाखक जानक हेतु दस-बीस हजार खर्च करब अधिक नहि भेल । एहन स्थितिमे तँ लोक अपन घड़ारी पर्यन्त बेचि लैत अछि । हम तँ केवल एहि छत्ताक मूठ बेचलहुँ । मुदा से ततबामे बिकायल जे छी मासक बदलामे हम सभ तीन वर्ष मंसूरीमे राजसी ठाठमे रहलहुँ माने काफी हाइ स्टैण्डर्ड लाइफ लीड करैत रहलहुँ । ओ तीन वर्ष एखन धरि जीवनक अविस्मरणीय काल रहल अछि आ भविष्यमे रहत । बस, हाथ रे मंसूरी लाइफ !’ ओ आँखि मुनि लेलनि ।

हम तँ ‘चित्र लिखल जनि साँस न बाक’ जे महाकवि मनबोधक कल्पना छलनि तकर प्रत्यक्ष उदाहरण भऽ गेलहुँ । कथी ले’ मुँहसँ ‘हँ-हँ’ किछु बहरायत । एक टक फल्लौं बाबूक दिस तकिते रहि गेलहुँ ।

‘ओहि समयमे असलमे पूछी तँ राजकाज सभ किछु हमर दाइजी माने मदर सँह देखैत छलीह । कतेक स्त्रीगणकेँ होइत छैक जे काशी, प्रयाग, सिमरिया, राजगीर आदि तीर्थक नामपर दूर कऽ आओत, मुदा हमरा मदरक सिद्धान्त छलनि जे ‘मन चंगा तँ कठौती गंगा’ आ मोनमे पाप पोसने कतबो तीर्थ घूमि अयलासँ कोन फल ? यदि हृदय पवित्र छैक, तीर्थराज प्रयाग यँह काया थिक । तेँ हमर मदर ड्योढ़ी छोड़ि कतहु

नहि जाथि । धर्मक हेतु जतेक दान-पुण्य होइत छैक से समय-समयपर एही ठाम करैत रहलहुँ । जमीन्दारीक सभ कागत-पत्रो हुनके वृजल छलनि । स्टेटक मैनेजर से हमर मामाजी अपने छलाह ।

‘से, जखन डाक्टर एस. सी. सेन, ओल्ड एम. बी. बी. एस. क्लाइमेट चेंज करबाक एडभाइस देलथिन तँ मदर ओ मामाजीक विचार भेलनि जे मंसूरी चल जाइ । अपना घरमे तँ लोक कोनहुना निर्वाह कऽ लैत अछि, मुदा बाहर गेला उत्तर तँ कुलक जे मर्यादा रहैत अदलैक अछि तकर निर्वाह करब आवश्यक भऽ जाइत छैक । ओना, अहूँ वृद्धिते होयबैक जे जमीन्दारी चल गेलाक बाद केहन-केहन हाथी सभ कोना अड़रा-अड़रा खसलाह अछि । की स्टैण्डर्ड मेन्टेन करैत छलाह आ आब कोन दशासँ दिन कटैत जाइत छथि । तेहना स्थितिमे हमरा तँ मात्र अठारह हजार नगदी आ डेढ़ सय बीघा जिरात छल । एकरा अतिरिक्त हाथी, घोड़ा, गाय, बड़द, महींस आदि मालजाल तँ गृहस्थाश्रममे आवश्यक होइते छैक । नगदी तँ समाप्ते भऽ गेल छल । जिरातसँ कतेक धरि चलऽवला ? हाथी, घोड़ा बेचि लियऽ तँ तुरन्त समाजमे नाहँसाइ होइत । संगमे बहुआसिनक देखरेख करबाक हेतु दुइयो टा खवासिनी, अपना हेतु एक टा खवास आ एक टा भनसीया तँ परम जरूरी छले । तेँ नहि किछ तँ दसो हजार टाकाक प्रबन्ध आवश्यक छल । हाथी घोड़ा तँ साग भाँटा थिकै नहि जे ढाकीमे माथपर लऽ कऽ क्यो बेचि आओत । आ दोसर बात ई जे समाजमे हाथी-घोड़ा किनबाक सामर्थ्य तँ आड़रपर गनलेगूथल लोककेँ रहैत छैक ।

‘यँह सभ कारण छलैक जे एहि छत्ताक मूठ हमरा बेचि लेबऽ पड़ल । जमाहिरातक बात छलैक तेँ ओहि बेरक यात्रामे अहूँक पिताकेँ संग कऽ लेने छलियनि । ओहन जीहरी अपना समाजमे दोसर अछि कहाँ ? एहि सभ ठाम ओ वस्तु किननिहार कतऽ भेटैत ? ओ तँ आरो बेसी दाम देया दितथि, मुदा अपने अगुता गेल छलहुँ तेँ मात्र एकतालीस हजारमे ओ मूठ बिका गेल, मुदा डंटी, कमानी, कपड़ा एखनो हम सुरक्षित रखने छी ।’



हम कतबो स्मरण कऽ अग्रलहुँ जे एहि महानुभावकेँ कतहु देखने छियनि, किन्तु स्मरण नहि भेल । एतबा तँ बुझिये गेल छलियनि जे हमरा चिन्हबामे-हिनका भ्रम भऽ रहल छनि । एतेक आत्मीय भावसँ जे गप्प करैत हो तकरा ईहो कोना कहल जाय जे हम चिन्हजहुँ नहि । ओ अपन उपाख्यान सुनौने जल जा रहल छलाह ।

‘कहबो छैक, ‘टुटलो हथियार तँ नी घरक साङह’ । आब तँ ओहन वस्तु ने कतहु भेटतैक ने कयो बनबाइये सकैत अछि । एतेक पुरान होइतो एखनो जँ ओकर कपड़ा देखबैक तँ बुझि पड़त जेना कोनो सुकेशी नाथिकाक उन्मुक्तकुंचित कचराशि हो । एखनो तेहन व्यूटीफुल माने सुन्दर लगैत छैक जे हटीनहुँ आँखि ओहि दिससँ हटिते ने छैक, यद्यपि राखल-राखल झिगुर ओहि कपड़ाकेँ चाटि गेलैक अछि । आब बुझना जाइत अछि जे बेसी दिन रखला उत्तर ओ वस्तु नष्टभ्रष्ट भऽ जायत । अपने आब ओहि छत्ताक उपयोग करब से अनसोहान लागत । तँ इच्छा होइत अछि जे बेचि ली । सोइहो कमानिक नोकपर जे जमाहिरातक कुन्नी सभ छैक से नहियो किछु तँ दू अढ़ाय हजारक अवश्य होयतैक । मूठ नहि छैक तँयो डंटीमे दू अढ़ाय सेरसँ कम चानी नहि होयतैक । आब तँ अहाँक पिता वृद्ध भऽ गेलाह तँ एम्हर नहि अबैत छथि । अहूँ तँ हुनक गुण अवश्य सिखने होयब । तँ अहाँक लग चर्चा कऽ देलहुँ अछि । यदि कयो तेहन सौखीन लोक भेटि जाय तँ एहिपर भिड़ा दिएक । अहाँकेँ उचित कमीशन भेटबै करत । पलखति हो तँ ड्योडीपर दसो मिनटक हेतु अवश्य आवी ।

ओहि अद्भुत छत्ताक वर्णन सुनि मोनमे देखबाक लोभ भऽ गेल छल । हुनक गप्पक छविछटा देखि ट्रेनमे समय कटबाक हेतु जे एक मित्रक सद्यः प्रकाशित उपन्यास संग लऽ लेने छलहुँ से पढ़बाक सोहे बिसरि गेल । हमरा रेलगाडीमे पढ़ब वड़े उत्तरैत अछि । मनुक्खक ओहि अथरबोनमे हम पूर्णतः एकान्तताक अनुभव करैत छी, किन्तु फल्लौ बाबूक गप्पो कोनो उपन्याससँ कम रोचक नहि छलनि । धनिकक बूड़ि बैद्यनाथ अवतार जे

ओहि व्यक्तिक विपन्नता, कौलिक बड़प्पनक मोह आ एहि दुर्गंत स्थितियोगे अतिथिक सत्कार करबाक मनोरथ देखिकऽ दया भऽ गेल । . . . मानि लेलहुँ जे पूर्वज शोषणे द्वारा धनसंचय कयने होथिन, मुदा ककरो द्वारा कयल गेल पापक दण्ड ककरो दऽ देल जाइक, कहाँ धरि न्याय्य थिक !

कहबो गड़ल गेल होयतैक से एहने एहने लोककेँ दृष्टिमे राखि कऽ । हुनका गप्पसँ ई बुझबामे कनेको भाडऽ नहि रहल जे फल्लौ बाबू खानदानो रईस छथि । गप्पपर जँ चप्प दऽदिएक तँ अखरकट्टू डाइनि जकाँ एहि अखरकट्टू रईसक रूप आरो निखरत । तँ हम गप्पमे झीक देलियेक—एहन सम्पत्ति तँ एक तरहँ वाप पुरखाक स्मारक होइत छैक . . .

फल्लौ बाबू गप्पकेँ बीचमे लप्प दऽ लोकतै कहलनि—से तँ अवश्य । हमरा बुझब जे कोनो हैण्ड टू माउथ मानि भरिपेट भोजनक समस्या तँ नहि अछि । कोनहुना एखन धरि साविकक प्रतिष्ठाकेँ बचविते आवि रहल छी । एखनो पाँच टा नोकर ड्योडीपर रहिते अछि । मौनिङ्ग वाक माने भिनसएका टहलनाइ, स्नानसँ पूर्व किछु फ्रूट्स, स्नान-ध्यान कऽ जल-पानमे सोहारी तरकारी मधूर भेले ताकय । दस गोटे विचारे पुछबाक हेतु प्रातः काल कऽ बँगलोपर अबिते अछि । तँ दुइयो घण्टा कचहरी लगाकऽ बैसऽ पड़िते अछि । कतबो घटि गेल छी तथापि अपने जिरातमे जाकऽ आरिपर बैसब से तँ नहि भऽ सकैत अछि । लोक देखत तँ यँह कहत जे फल्लौ बाबू विलटि गेलाह । दोसर अपन-अपन अभ्यास होइत छैक । जाहि देहमे पाब-पाब भरि गुलरोगनक तेल पचाओल जाइत छल से देह साओन-भादवक रौद कोना सहत ?

तावत गाड़ी स्टेशनपर आवि गेल । फल्लौ बाबू धड़फड़ा कऽ उतरैत हमरा ड्योडीपर अग्रवाक पुनः आग्रह कयलनि । हमरा ने हुनक नाम बुझल ने गाम । पुछला उत्तर तँ सभ बात गड़बड़ा जाइत । हम अथ-उतमे पड़ल रहि गेलहुँ आ गाड़ी फेर ससरि गेल ।

हमरो ओहिसँ अगिले स्टेशनपर उतरबाक छल । ओहि ठामसँ दू माइल

पच्छिम जधबाक छल एक व्यक्तिसँ भेंट करबाक हेतु । अगिला स्टेशनसँ उतरि हम गन्तव्य स्थानर पहुँचलहुँ तँ अवश्य, किन्तु जनिकासँ भेंटक उद्देश्ये गेल छलहुँ से संयोगवश गामसँ बाहर चल गेल छलाह । दोसर कयो परिचित लोक हमर छल नहि । तँ उनटे पयरे घुरि गेलहुँ, मुदा ओही ठाम पता लागल जे रतका गाड़ी एहि हाल्टपर नहि ठाढ़ होइत छैक । हमरा अगिला स्टेशन अथवा पछिला स्टेशनपर जाय पड़त । तखन हम ओही स्टेशन दिस चलि पड़लहुँ जाहिपर फल्लौ बाबू उतरल छलाह । ओ स्टेशन चारि सढ़े चारि माइल ओहि ठामसँ आ पाँच साढ़ पाँचक अमल भऽ गेल छलैक ।

हम हड़बड़मे दड़वड़ दंत बढल चल जाइत छलहुँ तावत संयोगसँ दू अढ़ाय माइल आयल होयब कि एक कोनसँ मेघ उठलैक आ तड़तड़ाकऽ वर्षा आरम्भ भऽ गेलैक । सूर्यास्तप्राय समय छलैक । कारी-कारी घटासँ आच्छन्न आकाश आ ताहिपरसँ बुन्द छोड़ि बरिसैत मेघ । हम छाती तानिकऽ चलनिहार लोक छाता किएक संग कऽ लेब । छाता जतहि लऽ जाइ ततहि छोड़ि देबाक अभ्यासी लोक । यदि कदाच नितान्त आवश्यकता पड़िये गेल तँ कोनो इष्टमित्रसँ माइड कऽ काज चला लैत छी । बिसरियो गेलहुँ तँ कोनो सन्ताप नहि । खान-खा हमरासँ दाम असूलि लेताह तेहन अनुदार हमरा मित्र मण्डलमे नहि कयो छथि । तखन अपने छाता कीनिकऽ जे कतहु बिसरि आयब, एहन सन्ताप बेसाहनिहार लोक हम छीहे नहि । आ आइ छाताक प्रयोजन होयत तकर तँ कोनो आभासो नहि छल ।

अगत्या रस्ताक कातमे एक शिष्ट व्यक्तिक दलान सन बुझना गेल । हम तितबाक भयसँ फानिकऽ ओहि ओसारापर चढ़ि गेलहुँ । ओहि ठाम एक टा लटपटहा कुसी राखल छलैक आ एक टा चौकी । ताहिपर एक टा

पटिया देल । एक व्यक्ति खरामपर ठाढ़ । मुखान्ध भऽ गेल छलैक । हमरा ओहि झलफलमे देखना गेल जे हमरा ओसारापर चढ़िते ओ व्यक्ति लुद दऽ ओहि कुसीपर बैसि गेल आ दू मिनटक अन्तरालपर दस मिनटमे पाँच गोटे संज्ञाक सम्बोधन कारकमे प्रयोग करैत रहल—रौ रमफलबास... रौ फगुनियाँSS... रौ रोगहाSS... रौ फौदरवाSSSS... रौ सोनमाSSSS... ! अन्तिम सम्बोधनक ध्वनि जखन प्रतिध्वनित भऽ शान्त भऽ गेलैक तँ हमरा दिस संकेत करैत ओ व्यक्ति बाजल—हे ओ बटोही ! एहि तखत-पोशपर बैसि जाउ ।

स्वर हमरा परिचित बुझि पड़ल आ असलमे पूछी तँ तखतपोश शब्दसँ हमरा परिचय नहि छल तँ शब्दक अर्थबोध नहि होयबाक कारणे आधा मोन अर्थक अनुसन्धानमे लागि गेल आ आधा मोन परिचित स्वरकेँ स्मरण करबामे बँटि गेल । एही द्वैध मनःस्थितिमे हम ततमताइते छलहुँ तावत दोसर आदेश भरल स्वर सुनि पड़ल—पटिया बिछाओल छैक से समेटि दियोक आ थिर भऽ बैसि जाउ । एखन ई पानि छुटबाक कोनो लक्षण नहि धयलक अछि । ई खबसा सभ पानिक लाथे कतहु कोनमे कालकेँ कटैत होयत । बैमान भऽ गेल लोक !!

तावत जाहि ठाम ठाढ़ रही ताहि ठाम टप् टप् चूबऽ लगलैक । हम चौकी दिस सहटि अग्रलहुँ । ओहि कुसीपुरुषक कुसी सेहो डोलि उठलनि, ओहू ठाम चारसँ टप्-टप् टप् । कुसी घुसकबैत ओ स्वगत बाजि उठलाह—बँगलो लोक करैत अछि । एकरा रिपेयर करायब एकदम इमर्जेंट अछि । कुसी घुसकाकऽ राखि जहाँ बैसऽ लगलाह कि पौआ लेऊँपर पड़लाक कारणे कड़कड़ा उठलनि । खसंत खसंत बँचलाह आ बँचैत-बँचैत पुनः स्वगत बाजि उठलाह—चेयरमे सेहो ब्रेकेज भऽ गेल अछि, एकरो रिपेयर करायब अन्भवायडेबल अछि ।

ओम्हरसँ झटक मारैत छलैक तँ हम चौकीकेँ कनेक भीतर बीच लेबऽ चाहलहुँ । द्रवण्टी एट अथवा पचीसीमे जेना गोधियाँ बैसैत अछि तहिना ओहि चौकीमे दू टा पौआ आ दू टा पजेबाक जोड़ल अड़कन छलैक । घिचैत देरी पञ्च



ढनमना गेलैक । तावतेमे एक टा बुढ़िया खवासनी सिरकी हटाकऽ एक टा प्रकाश राखि गेल । ओ प्रकाश की तँ रेलवे गुमतीपरसँ आनल पुरान लालटेम । एक टा डिबिया जरैत ओहि खोलमे बन्द । हम ढनमनायल पजेवाकेँ सरियावऽ लगलहुँ तावत ओ कुसीपुरुष अन्तर्धान भऽ गेलाह ।

बाहर मेघ झमकि रहल छल । आषाढ़ मास, आर्द्रा नक्षत्र, ज्योतिषी जीक स्त्रीपुंयोग । तखन भरि राति छोड़त कोना ? ओहि गुमतीपरक लालटेमक इजोतमे एकसरे बैसल-बैसल राति दस बाजि गेल, बुनछक होयवाक कोनो बाट नहि ।

तावत देखैत छी जे वैह बुढ़िया खवासनी एक टा चड़े-रीमे सेर आधेक चूड़ा ताहिपर गोटेक कनमा गूड़, कतबहिमे एक टा पातक टुकरीपर थोड़क नोन मेरिचाइ आ एक टा फाँड़ा अँचार, एक टा मटकूडीमे पाव डेढ़ पाव दही आनि कऽ रखलक । पुनि एक टा पोआरक बीड़ी, एक डोलमे पानि आ लोटा तथा एक खण्ड केराक पात आनि कऽ धऽ देलक आ चल गेलि ।

हमरा मोनमे ई विश्वास दृढ़ भेल जाय जे अपना पितामहक अद्भुत छत्ताक वर्णन कथनिहार रेलगाड़ीमे भेंट भेल भूतपूर्व जमीन्दारे साहेबक घर थिकनि । समाजवादी समाजक निर्माण करवाक धुनिमे आर्थिक विष-मताकेँ दूर करवाक नारा देनिहार राजनेतालोकनि कोना तरकेँ ऊपर



श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

आ ऊपरकेँ तर कऽ आर्थिक वैषम्यकेँ बढ़ा रहलाह अछि ताहिपर तर्क-वितर्क करैत एकसरे विचार-सागरमे डूबि गेल छलहुँ से चूड़ा दहीक एहि आगमनसँ जेना भक् दऽ बाहर आबि गेलहुँ । चूड़ा दहीकेँ देखिकऽ हमरा मोनमे विचार उठऽ लागल जे एहि विपन्न परिवारक एतबा अन्न खा लेवाक हमरा कोन अधिकार अछि ? फेर ने जानि अन्तरक कोन भावना प्रेरित कयलक जे हम ओहिमेसँ थोड़ेक चूड़ा आ शेष सभ सामग्री नोन अँचारकेँ छोड़ि सानि कऽ खा लेलहुँ । तावत फेर ओ बुढ़िया आबि एक टा सतरंजी ओ गेड़आ ओहि चौकीपर राखि देलक आ डोल चड़े-री आदि उठाकऽ जाइत कहैत गेलि—भोरमे सरकार कहलैथ गऽ भेट कऽ कऽ जाइ लय ।

एतेक राति कऽ एहि अनचिन्हार गामसँ चलि देवाक तँ कोनो प्रश्ने नहि छल, तखन भोरमे अन्हरोखे उठि कऽ जे चलि दितहुँ ताहिमे अवरोध उपस्थित भऽ गेल । ओहि सतरंजीकेँ पसारि हम कल्याण करीट दऽ देलहुँ । मोस तँ बड़ कटैत छलैक, मुदा थाकल रहलाक कारणेँ बेसी काल कण्ट नहि दऽ सकल । निद्रा जे भेल से भेर भऽ कऽ सूति रहलहुँ । भोरमे अहलभोरे निन्न टूटल । प्रातः कृत्य समाप्ते कऽ ली । ई रईस लोक छथि, कखन उठताह, के जनैत अछि । हम लोटा लऽ कऽ बाध दिस बढ़लहुँ तँ किछु दूरपर एक टा जामुनक गाछ, गाछतर फुलडाली लेने एक व्यक्ति साँचीक अधधोतिथा कयने जामुन बीछि रहल छल । बाह्यभूमिसँ घुरला-पर ओही ठाम एक टा चभन्चा छलैक, तकर पछविरिया मोहारपर घेड़ल-मेड़ल छोटछिन फुलवाड़ी सन, ताहिमे टाटक काते-काते सात आठ टा छोटे-छोटे लतामक गाछ ताहि गाछसँ छोटे सन लग्गी लऽ कऽ ओहिना फुलडालीमे लताम तोड़ैत देखलैक ।

हम दतमनि धरिक काण्ड समाप्त कऽ दलानपर अग्रलहुँ तँ कुसीकेँ एक टा खम्हेलीपर भऽ देने घरबँयाकेँ ओहि-पर ओहिना अधधोतिथा कयने बैसल देखलियनि ।

आब मोनक आशंका भेटा गेल छल । ई फल्ले वावू बैसल छलाह । हमरा देखैत हुलसि कऽ बजलाह—राति अही छलहुँ ? रातिमे तँ से बुझबै नहि कयलहुँ । हमरा तँ भेल जे कोनो अभ्यागत थिकाह । कोनो कण्ट तँ ने भेल ? अहाँकेँ तँ व्यर्थ चुड़ैलहुँ । अहाँक पिता तँ दस-दस दिन ड्यूटीपर रहैत छलाह अछि । आब तँ पैरुख घटि गेलनि तँ नहि अबैत छथि । अच्छा किछु इमर्जेन्सी भऽ गेल अछि तँ जाहि छत्ता दऽ कहने रही से देखा दैत छी, जँ शीघ्र कोनो ग्राहक भेटि जाय तँ नीक । एतबा कहैत ओ अन्दर गेलाह आ एक टा पुरान कपड़ामे भिड़ियाकऽ बान्हल ओहि छत्ताकेँ फोर्ल कऽ हमरा सोझाँ राखि देलनि ।

छत्ता पैंथ अवश्य छलैक, कपड़ो रेशमी छलैक, मुदा कमानिपर सुन-हलापर कोनो पालिस आ नोकपरक भुटकामे अनेक रंगक शीशा जड़ल । काठक इँटीपर खूब पातर कऽ चानीक पत्तर चड़ाओल । कपड़ा सहसाक्षक सहोदरे सन । हमरा बूझि पड़ल जे सम्पत्तिक नामपर दू तीन भरि चानी ओहिमेसँ अवश्य बाहर होयतैक । बेसीसँ बेसी पन्द्रह टाका ओकर दाम होइतैक ।

हमरा ओहि व्यक्तिक विपन्नता, कौलिक बड़प्पनक मोह आ एहि दुर्गत स्थितियेमे अतिथिक सत्कार करवाक मनोरथ देखिकऽ दया भऽ गेल । हम कल्पना करऽ लगलहुँ जे एहि व्यक्तिक बाल्य जीवन कतेक दुलार-मलारमे पालल गेल होयतैक, यौवन कतेक उमंग ओ उल्लासक बित्तीने होयत,

आ आइ एहि बार्द्धक्यमे जीवनक भार वहन करबामे कोन प्रकारक दुरुहता अनुभव कऽ रहल होयत ? मानि लेलहुँ जे पूर्वज शोषणे द्वारा धनसंचय कयने होथिन, मुदा ककरो द्वारा कयल पापक दण्ड ककरो दऽ देल जाइक, कहाँ धरि न्याय थिक ?

हमरा अन्तरक कोनो अज्ञात भाव हृदयकेँ द्रवित कऽ देलक । चार दिस देखलैक तँ बूझि पड़ल जे तीन वर्षसँ एहिपर खढ़ नहि पड़ि सकलैक अछि । तावत वैह बुढ़िया खवासनी एक टा छिपलीमे थोड़ेक लतामक खण्ड आ आ थोड़ेक जामुन, कनेक नोन आनि कऽ सोझाँ राखि देलक । घरबँया आग्रह कयलनि—किछु फ्रूट्स खा लियऽ, बासी मुँहँ घर नहि छोड़ी ।

हम ओहि छिपलीकेँ खाली कयलहुँ आ जेजीमे पाँच टा दस ट ही छल से बाहर कऽ सोझाँ रखैत कहलियनि—ई तावत एहि बंगलाकेँ छरयवाक हेतु राखि लेल जाय । हम चेष्टा करब जे एहि छत्ताक ग्राहक कतहु भेटि जाय । से कहैत हम चलि देलहुँ ।

ओटाका विनु छुइतहि कहलनि—ई छत्ता अहाँ लेने जाउ । अपना पिताकेँ दऽ देबनि आ हमर नाम कहि देबनि ।

आब हमरा अपनाकेँ प्रकट करब अनिवार्य भऽ गेल । कहलियनि—हमरा पिताकेँ मुइना आब बीस वर्षसँ ऊपर भेलनि । अपने हमरा चिन्हवामे भ्रम कऽ रहलहुँ अछि । हमरा अपनेक नाम ज्ञात नहि अछि । एतबा कहि हम चलि देलहुँ । ओ दसटकही दिस तकलनि आ पुनि हमरा दिस आ जोरसँ सोर करैत कहलनि—ई कथा ककरो कहवैक नहि जे वावू साहेब छत्ता बेचऽ चाहि रहल छथि ।

मिश्र टोला, दरभंगा ।



# अपनेसँ लाथ कोन !

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

प्रणाम सर !

'प्रणाम प्रणाम'

कहल जाय कुशल छेम

अनेक दर्शन भेल

अहोभाग्य ! अहोभाग्य !!

दूर देशमे जे क्यो

अपन लोक भेटै छै

होइ छै जे रत्नराशि

हाथ लागि गेल अछि ।

अपन लोक अपने थिक,

कतहु रहओ, थिक अपने ।

पण्डित हो, शिक्षक हो,

गामकेर सुधारक हो,

लुच्चा हो, लम्पट हो,

संस्कृति-संहारक हो,

आफिसमे हाकिम हो

अथवा किरानी हो,

पिउन हो, चपरासी हो

लीडर हो, डीलर हो,

एडवोकेट, प्लीडर हो,

अथवा विश्वविद्यालयमे

प्रोफेसर, रीडर हो,

मन्त्री, उपमन्त्री हो,

वीक्षक, परीक्षक हो,

लेखक, समीक्षक हो,

कोरो सड़क बान्ह पुल

कयुक ठिकेदार हो,

अपन लोक अपने थिक

ताहिमे सन्देह नहि ।

अपन लोक भेटलापर

मोनक उत्ताप सकल

हर्ष, शोक, सुख दुःख सब

पेटमे उबिआइत छै जे

कण्ठ दस बहार होइ ।

अपनेकेर दर्शन भेल

हम अपने अनाके ही भरिजुड़ालेल ।

अपने सबक देल आशीर्वादक बल छल,

जाहि बल संप्रति हम

'गजेटेड अफसर छी,

लगामे, एहीठाम

सरकारी अंचलमे ।

धृष्टता जे माफ हो तँ

सविनय निवेदन जे

चलिकऽ कने क्वाटरके

चरण-धूलि लगा दिऐ'

जाहिमे सानन्द फेमिलीक संग रही हम ।

अपनेसँ लाथ कोन !

सब टा तँ जनिते छी ।

हमर कोन लखा

हमरा पितोजीक बाहरसँ भीतरधरि

अपनेके बूझले अछि ।

ई तँ अवश्य जे ओनिघनकेर पुत्र छला,

भिनसर बहराइ छलथिन पिताजी

यजमनिकामे साँझे घुरै छलथिन

गठरी पोटरोक संग

ताहीसँ पालन परिवार भरिक

होइ छलनि ।

तेहना परिस्थितिमे

संस्कृतो पढ़लनि तँ

धन्यवादक पात्र हम

ताहीसँ बुझै छियनि,

किन्तु हमर परिस्थिति तँ

हुनकासँ भिन्ने छल

हम तँ कमौआ एक पण्डितकेर

पुत्र छलहुँ, सेहो मुँहचोर नहि

मुँह पुरुष कहबै छथि ।

नीक सनक रहन सहन

रखबे आवश्यक छल, किन्तु

जेना विद्यार्थी जीवन हम काटल से

अपनेसँ लाथ कोन

अपने तँ देखनहि छी ।

दस अने गजबला

कपड़ाकेर हाफ सटै

सिलहटिया जिन्नकेर

हाफ पॉन्ट भेटल से

सेबुन्थसँ नाइथधरि

धूसिघासि पहिरल हम

छोट बरु भऽ गल, मुदा

फाटल नहि अखज्ज सब

बादोमे बरख दिन

हमरोसँ छोट भाय

घाडि, घडि, पहिरि तखन

चरवहवाकै दऽ देलकै ।

अपने विचार करू—

आवहुँ जे नीक जकाँ

ओढ़ब नहि, पहिरब नहि,

खायब नहि, पीयब नहि,

नऽब नऽब हाकिम छी

धाखो क्यो मानत तँ ?

× × ×

आइये दऽ लिखने छला पत्र

पूज्य पिताजी जे—

फेमिली पहुँचाय देब

अपनहि हम आवि कऽ

अपनहुँ भरि आँखि देखि लेब

बनल हाकिम आ

संगहि संकेत छलनि—

'नगदी किछु चाही' से

किन्तु एखन अपनहुँके

सेटल करब बाँकी अछि

कतबो ओरिआय हाथ सकत कऽ

खर्च करू तँयो तँ अफसर छी

हमरो स्टैण्डर्ड अछि

मात्र मासिक वेतनपर

ककरा निर्वाह छैक ?

बाइलीकेर वाटो तँ

बादेमे फूजत गऽ ।

अपनेसँ लाथ कोन !

अपने की आन छी जे

अपन हाल अपनेसँ

राखू नुकाकऽ किछु ?

हुनके प्रतीक्षामे बैसल छी

स्टेशनपर अपन जीप अनलहुँ अछि

अंचल किछु फटकी छै ।

ओ तँ अठनियाँ एहि एक्कापर

बैसीने टिकटिक करैत

सोझे चल जंतथि आफिसमे

लोक की कहैत तखन ?

अपने विचारल जाय !

अफसरकेर वाइफ

मुदा भरि बहि लहठी

आ दसटकही छपुआ सन

थर्ड क्लास साड़ीमे

घोघतर नुकाइलि जेना

केमरा हो फोटोकेर ।

तँ हम भऽ सावधान

आगाँ बढ़ि अयलहुँ ओ

लता ओ कपड़ा से

सगे लऽ अनलहुँ अछि

अण्डरमे खटनिहार

चपरासी कलक आदि

ई ने कतहु चीन्हि जाइनि

साहेबकेर फादर आ वाइफ

छथिन एक्कापर

अपनेसँ लाथ कोन !

छकड़ऽ काल पिताजीके

पि अक्षर छोड़ि खाली

ताजी सन तेजी छनि

किन्तु हुनक करनोसँ

संसारे अवगत अछि

अपनो कमायलपर

नीक निकुत खाइत छी

चिक्कन सन पहिरै छी

कहुना कऽ स्टैण्डर्ड

मेन्टन करै छी तँ

ताहूले हाथ पयरपटकऽ लगैत छथि

ताही हेतु फेमिलीके

सगे जे राखि ली तँ

हुनकासँ पिण्ड छुटत

मोन रहत हल्लुक सन ।



बिहैसि देलक कुसुमा—“हम सभ मात्र मालिन छी श्रीजी । अहीँक अन्तरक सुगन्धित फूल लोडि अहीँके सम्मोहित करैत माला अर्पण कर-वाली ।”

ओ पुनः चषकमे आसव ढारस लागल ।

७

बड़ विकट मार्ग छलैक । कष्टकर चढ़ाइ । कनिये पयर हुसि जाय तँ सँकड़न हाथ नीच खाधिमे खसि कऽ सकचुन ।

चीशा पानीक पर्वत बड़ मनोरम आ बड़ भयावह । प्रकृति जेना आतंक आ सौन्दर्य दुनूके ओहि ठाम मिश्र-सिझरा कऽ छिड़िया देने हो ।

एक बाँस दिन ऊपर उठि आयल छलैक नील साड़ी आ पीयर कंचुकी पहिरने कुसुमा आगाँ आगाँ चलि रहल छल आ ओकरा पाछाँ राजा सलहेस हपसि रहल छलाह ।

शिखरसँ शिखरकेँ मिलबऽ बला मात्र एक बीत चाकर पथ । दुनू दिस मृत्यु जकाँ मुँह बौने खड़ । राजाजी सहसा चीत्कार कऽ उठलाह । आगाँसँ एकटा विकराल भालु ओम्हरे आबि रहल छलैक ।

गुड़ुड़ गुरुर ।

केँ ककरा कोना बाट दऽ सकत भालु आब कुसुमसँ एके लगपार छल ।

“कुसुमा, कुसुमा, अहाँ हमरा पाळू चल जाड । हम भालुसँ जुझब । समाज ले’ आ साधना ले’ हमरासँ अहाँक जीवन अधिक मूल्यवान अछि प्रिय ।” ... राजाजी आतंकित स्वरमे बजलाह ।

पाछू ताकि कऽ बिहैसि देलक कुसुमा । एके क्षणमे ओ भालु कुसुमाक समक्ष छल । राजाजीक मुँह मुखपाक करैत । शस्त्रो संचालनक गर नहि लागि रहल छलनि ।

कुसुमा भालु दिस हाथ बढा कऽ ओकर मूडी थपथपा देलकैक आ अपना पयर लगसँ एक मुठ्ठी कंकड़ उठाकऽ निचला ढलानपरक एकटा गाछपर झरझरा देलकैक । भालु ओम्हरे तकलक तँ ओ गाछ लाल लाल फरसँ लुबधल । ओ बड़े कौशलसँ नीचा उतरैत ओम्हरे ससरऽ लागल बाट छोड़िकऽ ।

कुसुमाक पाछू पाछू राजाजी एकटा कनेक चकरगर शिखरपर

अयलाह । ओहि शिखरपर एकटा बेस समटगर आमक गाछ ।

‘आबि गेलहुँ ।’ ... कुसुमा बाजलि । ओ एकटा पाथरक ढोकाकेँ, एकटा पल्लव तोड़ि ओहिसेँ झाड़ि बहाड़ि देलकैक आ हँसैत-हँसैत राजाजीक पगड़ी हुनका माथपरसँ लऽ कऽ ओछा देलकनि । राजाजी ओहिपर बैसि गेलाह ।

हुनका मुँहपर धाम बुनकि आयल छलनि । कुसुमा अपन आँचरसँ हुनक धाम वोछि देलकनि आ आँचरक खूँटेमे बान्हल दू खिल्ली पान लऽ कऽ हुनका मुँहमे खुआ देलकनि कि हुनक मुखायल मुँह हरियर भऽ गेलनि पान चिबबिते । ओ उत्फुल्ल भऽ उठलह आ अस्त्र-शस्त्र अपना देहसँ फराक कऽ पार्श्वमे राखि लेलनि । शिखर-मिहिर बसात हुनका बड़ सुखद वृक्ष पड़लनि आ हुनक सभटा अवसाद जेना पलधड़ीमे हरण भऽ गेलनि ।

“शिखरसँ नीचा दिस तकियो राजाजी उत्तर दिशामे आ मद्धिम स्वरमे बाजू जे की सभ देखि रहल छी ।” कुसुमा कहलकैक ।

राजाजी ओम्हरे तकलनि आ मद्धिम स्वरमे बजलाह—“एकटा सरिता बहल चल जा रहल छैक । सरिताक तटपर पाकड़िक एकटा पैघ गाछ छैक । गाछक ओम्हरे एकटा खोह देखि रहल छिएक । पाखरिकक छाहरिमे एकटा बयो विशालकाया तरुणी नडटे बैसलि छैक । की केश-राशि छैक एकर । एक केहन अपरूप सौन्दर्य छैक एकर सोटल घोटल आ स्फटिक पाथर सन छह छह । पोसुआ कुकुर जकाँ एकटा हुड़ाइ एकरा पयर लग पड़ल छैक आ पार्श्वमे एकटा भालु बैसल छैक । केहन टा टा छैक ई अजोध हुड़ाइ आ भालु । केहन आवेशसँ रहि रहि कऽ ओ तरुणी ओहि दुनू वन जन्तुकेँ दुलरा दैत छैक ।

“जकरा देखऽ ले’ अहाँकेँ एहि दुर्गम स्थान पर अनलहुँ अछि से ‘अरण्या’ यैह थिक ।” ... कुसुमा फुसफुसा कऽ कहलकैक—“एकरा सम्बन्धमे बहुत लोक कथा प्रचलित छैक । कहैत छैक जे पुष्पवती अवस्थामे एक बेर एकरा एकटा भालु उठा कऽ लऽ गेलैक कोना ने कोना ई निविड़ वन मे भालुए सबहिक संग रहल । किछु समय वितलापर ई जेना तेना

(शेष पृष्ठ १९ पर)

# विचार

# मंच

## विचार-मंचसँ विचारक प्रचारक

मैथिली आन्दोलन एवं मैथिलीक

समस्याक प्रसंग ‘मिहिर’क ‘विचार-मंच’ सँ अनेक विचारकलोकनि अपन अपन मन्तव्य जनौलनि अछि जाहि सभकेँ रुचिपूर्वक पढ़ैत अयलहुँ अछि । एहि प्रसंग अपन किछ विचार प्रकट करबाक इच्छा नहि छल । एकर कारण ई जे क्रियाशीलतामे जे जतेक शिथिल विचार प्रकट करबामे से ततेक चोख मैथिली क्षेत्रमे देखल जाइत छथि । मैथिलीमे एक टा बड़ प्रसिद्ध लोककित छैक ‘भुसकौल विद्याधर’क ‘गत्ता मोट’ ठीक तहिना मैथिली आन्दोलनमे जे जतेक निष्क्रिय से अनका उपदेश देबामे ततेक सक्रिय देखल जाइत रहलाह अछि ।

एहि मंचसँ सर्वप्रथम असोथकित जी अपन थकान व्यक्त करबाक हेतु लिखि बैसलाह जे हमरालोकनि एके बिन्दुपर ठाढ़ दौड़ैत अयलहुँ अछि । ठाढ़ो रहब आ दौड़ितो रहब ई दुनू क्रिया एक कालावच्छेन नहि भऽ सकैत अछि । हँ, एक बिन्दुपर ठाढ़ भेल कुदैत रहब संभव आ मैथिली आन्दोलन एक बिन्दुपर कुदैत बहुत दिनसँ आबि रहल अछि से सर्वथा सत्य रहितो मैथिलीक आन्दोलनमे कुदनिहार सभसँ वयोवृद्ध मैथिलीसेवक बाबू श्री भोलालाल दास ‘विचारले’ ज्योतिषाचार्य कविवर श्री सीताराम झा, ज्योतिषाचार्य पं. श्री बलदेव मिश्र तथा दोसर पीढ़ीमे आन्दोलनक क्षेत्रमे अवतीर्ण भेनिहार प्रो. श्री सुरेन्द्र झा ‘सुमन’, प्रो. श्री कांचीनाथ झा ‘किरण’, प्रो. श्री रमानाथ झा आदिलोकनि अद्यावधि नहि थकलाह अछि, परन्तु असोथकित जी दू चारि वर्ष एहि मंचपर कुदलाह-फनलाह आ असोथकित भऽ गेलाह । हमरालोकनि तँ एखन सोझ भऽ कऽ आन्दोलनक अखाड़ापर डंडबैसकी करब सेहो नहि सीखि पौलहुँ । एहि मंचपर अथक परिश्रमक प्रयोजन छैक । जनिका सभकेँ एखनधरि थकानक अनुभव नहि भेलनि अछि से लोकनि बहुत सूक्ष्म दृष्टिय

मैथिलीक गतिविधिक निरीक्षण-परीक्षणमे लागल रहलाह अछि । आ सूक्ष्मतासँ दखनिहारकेँ आन्दोलनक प्रगति सेहो परिलक्षित होइत रहलनि अछि ।

आइसँ ३०-३२ वर्ष पूर्व मैथिलीकेँ एक ऐच्छिक विषयक रूपमे एहि प्रान्तक तत्कालीन विश्वविद्यालयमे अयोत् पटना विश्वविद्यालयमे मान्यता प्राप्त भेलैक । एक भाषाक विकास ओ प्रचारक दृष्टिये आधा शताब्दी कोनो विशेष समय नहि मानल जयतैक, किन्तु से पुरवामे एखनो अठारह-बीस वर्ष बाँकी छैक ।

हम स्मरण देआवब जे ५०-५१ ई०मे जखन प्रा. श्री जयदेव मिश्र चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ पटना महाविद्यालय चल गेलाह तखन सम्पूर्ण मैथिली क्षेत्रमे दोसर एम. ए. नहि भेटि सकलथिन तँ एक प्रतिष्ठित साहित्यकारक रूपमे स्व० ईशानाथ झाजीक निमुक्ति मैथिलीक प्राध्यापकक रूपमे भेलनि । आ आइ ओही मैथिली भाषामे एम. ए. केँ केँ पृथ्वी पी-एच. डी., डि. लिट उपाधधारी विद्वानक पथार लागि रहल अछि । सम्पूर्ण प्रान्तमे सभ विश्वविद्यालयकेँ मिलाकऽ एक सयसँ अधिक मैथिलीक प्राध्यापक जीविकापन्न छथि । दस हजारसँ ऊपर छात्र अध्ययन कऽ रहल छथि । यदि एहि अठारह-उन्नैस वर्षमे एक संख्या सय संख्याकेँ पार कऽ चुकल अछि तँ की आबऽवला १८-१९ वर्षमे ई हजारपर नहि पहुँचत से कोना कहल जा सकैछ ?

जाहि द्रुतगतिये उच्च विद्यालय एवं महाविद्यालयमे प्रसार भऽ रहल अछि ताहि दृष्टिये एहि गाछक जड़िये अत्यन्त दुबल अछि । प्राथमिक पाठशालामे अध्यापन कयनिहार शत प्रतिशत नहि तँ नितानबे प्रतिशत अध्यापक मैथिलीक प्रगतिक, मैथिलीक आन्दोलनक बाटपर काँट बनि ठाढ़ छथि । अभिभावकलोकनि तँ आन्तर, बहीर छथिहे जनिका अपना





## आयल वसन्त

: श्रीमती नीरजा रेणु :

हे सखी ! वसन्त ऋतुक शुभ आगमन भऽ गेल छैक । धरतीक आङनमे पतझर भऽ गेल छैक, ओकर स्थानपर सड़कपर एलेक्शनक क्रममे रंग-विरंगक झंडा सभ लह-लहा रहल छैक । क्यो खट्खटारी, क्यो नायलीनधारी अपन अपन साइकिलमे विभिन्न प्रकारक झंडा सभ लगा राजनीतिक प्रेमिके अनायासे मोहि लैत छथि ।

एलेक्शन-पंचशर अपन पांचो शर—लाउडस्पीकर, पोस्टर, मेनि-फेस्टो (समाचारपत्र आदिसँ), जुलूस ओ सभासँ जन-गणक निद्रा भंग कऽ देलनि छथि ।

कविलोकनिक समाजमे जोरक शोर मचि गेल छथि । राजनीतिक

ने मैथिली सुन्नैत छनि आ ने आन्दोलनक कयनिहारक डाकनि कानधरि पहुँचैत छनि । हमर निश्चित धारणा छथि जे मिथिलांचलक प्राथमिक पाठशालाक गुरुजीलोकनि जँ आइ सन्नद्ध भऽ जाथि तँ मैथिलीक प्रगतिक मार्गसँ सभसँ पैघ अवरोधक तत्त्व हटि जायत ।

रहल लोक सेवा आयोग आ संविधानक अष्टम अनुसूचीमे स्थान प्राप्तिक प्रश्न । ई दुनू स्थान राजनीति सँ सम्बद्ध छथि । जावत धरि राजनीतिक पुरुष मैथिलीक आन्दोलनके साहित्यकारक आन्दोलन बुझैत रह-ताह तावत एहि दिशामे सफलता सन्दिग्ध रहत । विचार प्रस्तुत कयनिहारलोकनिसँ हमर निवेदन जे परोपदेश पाण्डित्यके छोड़ि क्रिया केवलमुत्तरम् नीतिक अनुसरण करथि त मैथिलीक एहिसँ बेसी काज होयबाक संभावना । एखन एतबे । समय ओ स्थान भेटलापर आरो कहबाक धृष्टता करब ।

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' मिश्रटोला, दरभंगा ।

वेश्याक फाँसमे विद्यापतिक राधाके ओ लोकनि बिसरि गेल छथि । भोजन ओ वस्त्र भेल साध्य—तकरा हेतु कटु-मधुभाषाक जालमे कविताके ओ लोकनि कना रहल छथि ।

ग्रामक कोनो-कोनो गाछमे मंजरी क आविर्भाव भऽ गेल छैक । कोनो-कोनो गाछक ठुठ शाखा युगक अनटोटलतापर अट्टहास कऽ रहल छैक ।

कोइली अनेक वर्षसँ कू-कू कऽ रहल छल । जखन ओकर मर्म क्यो नहि वृक्ष सकलैक तँ आव ओ मौन साधि लेलक छथि । आव समस्या उठल जे वसन्तमे चुप्पी कोना रहत ? तँ संविधानक धारा ४२० क अनुसार सरकार दिससँ कानून बनि गेल छथि जेकोइलीक स्थानपर वसन्त पंचमी दिनसँ लाउडस्पीकरसँ फिल्मक गीत सभ सुनाओल जायत । जँ महिला-लोकनिक नग्नता मात्रक वर्णन रहत तँ ओ गीत फिल्मी गीत नहियो रहलापर प्रसारित कयल जा सकैत छथि ।

ओही दिन (वसन्त पंचमी) सँ श्रीमानजी सभ श्रीमतीजी सभक अभाव-अभियोगसँ ग्रस्त सेहो होय-ताह । सर्वप्रथम तँ श्रीमतीजी वसन्त पंचमी दिन सरस्वती पूजा देखबाक हेतु टहलबाक हेतु जयतीह । तँ हुनका नवीन वस्त्रादिसँ सुसज्जित होयब आवश्यक रहतनि । किछु दिनक उपरान्त जाड़ कम भेलासँ प्रत्येक सौन्दर्य-प्रसाधनमे परिवर्तन होयत । श्रीमानजी सभके अपन भोजनक परिमाण अथवा प्रकारमे किछु कटौती अवश्य करऽ पड़तनि अन्यथा श्रीमती जी सभक मुखारविन्दसँ उदासीनताक तृप्ति दूर नहि भऽ सकतनि—वसन्तक प्रफुल्लता नहि आवि सकतनि । फगुआक दिन अबैत-अबैत अभाव-अभियोग ततेक उग्र रूप धारण कऽ लेत जे दुनू गोटेक मुँह बिना अबीर गुलालक लाल भऽ जायत ।

एखन धरि किछु गाछमे पतझर भऽ गेल छैक—ओकर ठुठ शाखा कविलोकनिक संसारके यथार्थसँ दूर कऽ दैत छथि । किछु गाछमे पुरनका जीर्ण-शीर्ण पात वृक्ष जे वसन्त आओत एहि डरसँ काँपि-काँपि धराशायी भऽ रहल छथि । ओकरा अपन जीवनक एके टा वसन्तक स्मरणसँ आतंक भऽ जाइत छैक जे एतेक ग्रीष्मक उत्ताप, शिशिरक सिहकी एके टा वसन्तक सुखमे बलबाक फल थिक । ओ पुनः वसन्तक विलासमे आनहर होयबाक आकांक्षा नहि रखैत छथि ।

पार्कक लानक मखमली दूबि नवयवतीक प्वाइन्टेड शूक खुरार-विन्दसँ मलिन भऽ जाइत छथि । बेचारा अशोकक शाखा सभ अपन पुरनके पात सभके जेना-तेना सटाकऽ रखने छथि । ओकरा सभके विश्वास छैक जे आव यथार्थ पदतलके नहि पावि पुनः पल्लवित नहि भऽ सकब ।

रोगक देवता एम्हर भिन्ने वसन्तोत्सव मना रहल छथि । ओ चेचक, हैजा, डिप्थीरिया आदि सेनाक संग अट्टहास कऽ रहल छथि । डाक्टर वा दवाखानाक कर्मचारीलोकनिके रुपैया रखबाक स्थान घरमे नहि भेटि रहल छनि । ओ लोकनि एम्हर बैंक जाथु वा रुपैया समटथु तकरे तारतम्य मे सदिखन रहैत छथि । खायब पीयब तँ एही वसन्तीमे विलीन भऽ गेल छनि ।

मच्छड़रानी अपन मान छोड़ि बिछाओनपर 'घनर-घनर' संगीतक अलाप करैत छथि आ कनियो आँखि लागि जाइत छथि तँ खन चुसि अपन कीटाणु रक्तमे प्रविष्ट कऽ दैत छथि ।

आब महानक महत्ता विशेष भऽ गेल छैक तँ परतीक कोमल दूबि सभ छीलि कऽ हटा देल जाइत छथि आ जीर्णशीर्ण पातक कोनो पैघ शाखाके कटा तोरणमे सजाय देल जाइत छथि—एम्हर-ओम्हर फुलायल छोट-छोटी गाछ सभके काटि देल जाइत छथि आ ओकर स्थानपर कागतक कृत्रिम फूल सभ डोरीमे लगा सजाओल जाइत छथि कारण जे वसन्तोत्सव मनयबाक हेतु अमुक नेताक आगमन भऽ रहल छथि । औपचारिकताक हृद् भऽ गेल—राजनीतिक वेश्या सभक आँखिक विवेक बन्द कऽ देलक छथि । अपन नग्न सौन्दर्यसँ सज्जनोक हृदयमे मोहक कालिमा व्याप्त कऽ दैत छथि ।

आइ वसन्त थिक—वर्ष भरिक सभसँ सुन्दर ऋतु सभसँ सुन्दर समय । तँ हे सखी ! कथित श्रीमान् सभके धन्यवाद दऽ दियौन जे केहन दिव्य समयके बना देलनि छथि आ अपनो-लोकनि कृतार्थ होउ ।

द्वारा—श्री हरिश्चन्द्र मिश्र, स्पेशल ऑफिसर, राज दरभंगा, दरभंगा ।

## गौरी पूजा

: श्रीमती सोनदाइ :

चलल सुनयना गंगाजल लऽ, बेलपात भरि फुलडाली ।  
धूप-दीप-नैवेद्य आनिकऽ, मंगल गाबथि सभ आली ॥  
पाछाँ बँसल दुलहा पकड़थि, संग देवा ले' कोमल हाथ ।  
फूल-पातसँ पुजि गौरीके, ध्यानमग्न भऽ झुकबथि माथ ॥  
सुनु अय गौरी विनति करै छी, छी अहँ जगतक माय ।  
जँ जूड़ल से कयल समर्पण, पद धयलहुँ सेवकाय ॥  
जीवन-रथ कहियो नहि टूटय, सभ संकट दुरि जाय ।  
अशरण-शरण अहाँ छी माता, सभ टा करिय उपाय ॥  
छी मतिहीन दीन दुहु प्राणी, गति नहि दोसर ठाम ।  
तँ रोपू प्रेमक तरु माता, नहि अछि दोसर 'काम' ॥  
अनुखन जे तब पदके' सेबथि, धन्य हुनक छनि भाग ।  
दुःखक-लेश कतहु नहि कखनो, दिन-दिन बढ़नि सोहाग ॥

द्वारा—पं. श्री महेश मिश्र, ग्राम-पत्रालय-जोंकी, भाया-वासोपट्टी, दरभंगा ।



## आइ राष्ट्रके पड़ल प्रयोजन

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' :

(१)

आइ राष्ट्रके पड़ल प्रयोजन  
तपःपूत किछु नेता चाही,  
सत्साहित्य-प्रणता चाही,  
शत्रु-सैन्य-दल मथन करक हित  
भीम समान विजेता चाही।

(२)

दिव्य दृष्टि व्याख्याता चाही,  
मन्त्रतत्त्व उद्गाता चाही,  
दलित पतित हित त्राता चाही,  
सत्यक अनुसन्धाता चाही।

(३)

व्याप्त सकल दुख-हर्ता चाही,  
देशक कर्ता धर्ता चाही,  
शिवि दधीचि कर्णक दानक  
पथकेर पुनः अनुसर्ता चाही।

(४)

मानवीय गुण श्रोता चाही,  
सद्बिचार प्रस्तोता चाही,  
ज्ञान-अग्निसे मनोविकारक  
हवन करक हित होता चाही।

(५)

जागरूकता दैनिक चाही,  
सभ बलिदानी सैनिक चाही,  
ठाम - ठामपर खीमा चाही,  
सतत सुरक्षित सीमा चाही।

(६)

सागरमे पनिडुब्बी चाही,  
शत्रुक दल ले कुब्बी चाही,  
पछिमा चाही पूबा चाही,  
सतत बनल मनसूबा चाही।

(७)

तोपक मुँहमे गोला चाही,  
कवच कुडली चोला चाही,  
किछु विमान बमवर्षक चाही,  
राष्ट्र - नीति आकर्षक चाही।

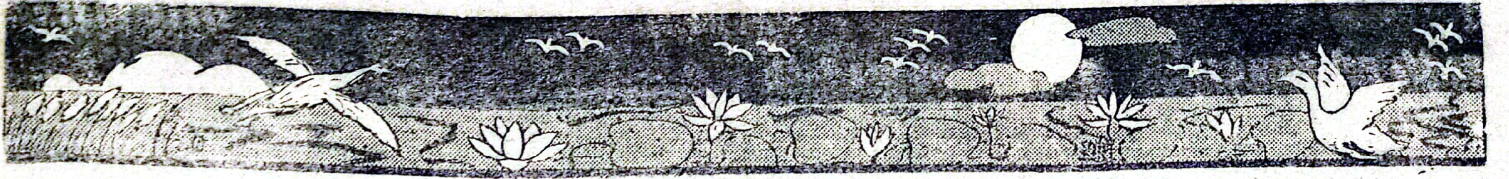
(८)

सदाश्रमी सभ कर्षक चाही,  
गौरव भारतवर्षक चाही,  
दृढ़ साहस संघर्षक चाही,  
फुजल बाट निष्कर्षक चाही।

(९)

राष्ट्र - विरोधी नाथल चाही,  
सभ बन्सीमे गाँथल चाही,  
बनल रहय आन्तरिक एकता,  
हो संगहि परिवार नियोजन  
आइ राष्ट्रके यह प्रयोजन।



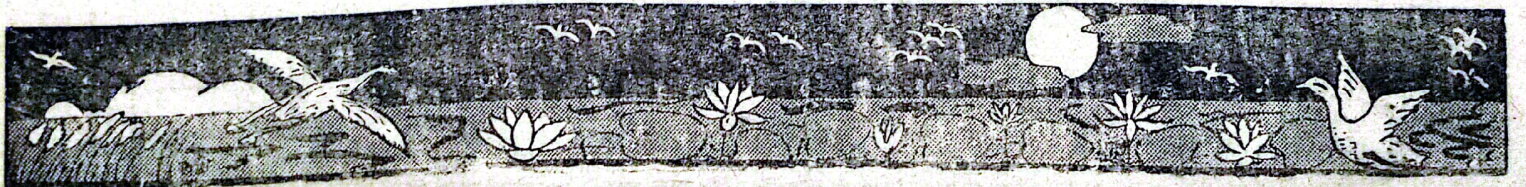


## मिथिला-गौरव

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' :

चलू लेखनी ओहि भूमिमे जतय छला राजषि विदेह ।  
 होइत सदेह विदेह कहौलनि कर्मयोगसँ राखि सिनेह ॥  
 गोतामे भगवान कृष्णकेँ लेबऽ पड़लनि जनिकर नाम ।  
 जनिक पुण्य बल जगत विदित युग युगसँ अछि ई मिथिला धाम ॥  
 जतऽ धरित्री पुत्री पौलनि पतिव्रता सीताक समान ।  
 तकनहुँ भेटि सकय नहि त्रिभुवनमे जनिकर एको उपमान ॥  
 ब्रह्मज्ञानी याज्ञवल्क्य ऋषि लेल हजारो गाय हँकाय ।  
 भरल सभासँ, तकिते रहला समुपस्थित पण्डित समुदाय ॥  
 स्वयं शंकराचार्य जतऽ भारती संग कयलनि शास्त्रार्थ ।  
 भेल अनन्वय उपमालंकारो जनिका लगमे चरितार्थ ॥  
 शंकर सन शंकरे तथा भारती सदृश नहि विदुषी आन ।  
 मण्डन-प्रिया-मण्डिता मिथिला सन दोसर नहि हो अनुमान ॥  
 यथा दिवसपतिकेँ उगवाले' दिशाकेर बन्धन न रहैछ ।  
 उदित होथि रवि जाहि दिशामे सँह दिशा प्राची कहबैछ ॥  
 तहिना सुपथ विषय हो अथवा, जाही पथपर राखी डेग ।  
 सँह मार्ग सन्मार्ग ब्रह्म, जगकेँ चलबाकेर हो उद्वेग ॥  
 जाहि ठाम उदयन समुदित भऽ गौरवोक्ति कयलनि उद्घोष ।  
 जनमि अयाची सिद्ध कयल 'थिकसर्वथेछ विभवक सन्तोष' ॥  
 साग खाय रहला जीवन भरि, किन्तु न दान कयल स्वीकार ।  
 'हम बालक, वाणी नहि बाला' जनिके पुत्रक थिक उद्गार ॥  
 जाहि ठाम गौतमक तर्क लग रामचन्द्र बनलाह अवाक ।  
 साहस के करताह ताहि ठाँ शास्त्र विषय चर्चा करबाक ॥  
 जकर कण्ठसँ निःसृत वाणी धारण कयलक वेदक रूप ।  
 बुध, धीरेन्द्र रोकि रथ रविहुक उदाहरण दऽ देल अनूप ॥

प्राणक आहुति देल, कयल नहि पराधीनता अङ्गीकार ।  
 नृप हर सिंह देवकेर गौरव अछि सुविदित सगरो संसार ॥  
 मातृभूमि रक्षा हित जीवनदानी जत शिवसिंह नृपाल ।  
 अक्षय यश अर्जन कऽ गेला जकरा खाय सकय नहि काल ॥  
 जनिक सखा मैथिल कवि कोकिल भाषा काव्य कुंजमे कूकि ।  
 प्राण-प्राणमे जीवन - दर्शनकेर चेतना देलनि फूकि ॥  
 विद्वत्तावल अजित कयलनि एहि राज्यकेँ जतऽ महेश ।  
 सजल, सफल सभ ऋतुमे रहइत अछि शस्ये' इयामल जे देश ॥  
 वागवतीक धारासँ सिंचित कण्ठकण्ठ वाग्धारा स्रोत ।  
 कमलाजल-सिंचित कमलक वन मधुपक दलसँ रहय इरोत ॥  
 तटबन्धक बन्धनमे जकड़लि कोसी जतऽ बहथि उत्फाल ।  
 गाबि नचाही हर हर बं बं कहि शिव भक्त बजाबथि गाल ॥  
 एखनहुँ रहि आसक्ति-विरत कत शक्तिक पूजनमे तल्लीन ।  
 रहथि तन्त्र-साधनमे लागल अनुखन सिद्धासन आसीन ॥  
 ठाम-ठाम उद्यान रसालक, कदलीवन प्रतिगृहक समीप ।  
 गाम-गाम डिहवार थान लग जरइत रहइछ सन्ध्या-दीप ॥  
 मन्दिर मन्दिरमे घण्टा-ध्वनिसँ दिङ्. मण्डल ध्वनित रहैछ ।  
 नित आनक उपकार करक हित लोक जतऽ सभ कष्ट सहैछ ॥  
 आडन-आडनमे पवित्र नीपल चौरापर तुलसी गाछ ।  
 यात्रामे शुभदायक मानल जाइछ भरल कलश ओ माछ ॥  
 जतऽ स्वभावेसँ होइत छथि परम विनोदी पण्डित लोक ।  
 विद्यादान-निरत रहि एखनहुँ जीवन यापन करथि कतोक ॥  
 चलू लेखनी ओहि भूमिके पुनि पुनि आइ नमावी माथ ।  
 अहक ठोर आ हमर कण्ठ दून संगहि भऽ जाय सनाथ ॥





साधारणतः हमरा सबक धारणा बनि गेल अछि जे समयमे घोर परि-  
वर्तन भऽ गेलक अछि। युग एकदम  
बदलि गेल अछि। एकटा अत्यन्त  
पुरान कहुनो अछि 'धर्म धाधर पापे'  
बुद्धि' बहुतोक हृदयमे विश्वास जमि  
गेलक अछि जे कलियुग धिकैक।  
एहि युगक मुख्य धर्म धिकैक पापकर्ममे  
वृद्धि करब। तेँ युगक अनुकूल चलनि-  
हारक उत्पत्ति होयतक आ प्रतिकूल  
चलनिहारकेँ पराभवक सामना करऽ  
पड़तक अर्थात् पापाचरणे युगक  
अनुकूल कर्तव्य थिक। राजाक विरुद्ध  
चलेने वसातः सुखशान्तिक कल्पनो  
करब निरर्थक थिक। यह कारण  
अछि जे आधिभौतिक समुन्नतिकेँ  
लोक चरम उत्कर्ष मानि बैसल अछि।  
फलतः आध्यात्मिक प्रवृत्तिक क्रमशः  
ह्रास होइत गेल अछि।

एहनो समय छल जहिया जाति-  
पाँति कुल-मूल, पाँजि-पाँटि आदिकेँ  
प्रधानता देल जाइत छल आ दान-  
दहेज, इदाइ-विदाइ गौण मानल जाइत  
छल। ओहि व्यवस्थामे कतहु कन्याक  
मूल्य बढि जाइत छल आ कतहु  
बालकक। कन्याक आधिक्य ओह  
समयमे पाछा समाज मध्य छल  
जरुर अबल प्रमाण बड़विवाह प्रथा  
थिक। एहन नहि सुनल जात अछि  
जे समाजक सम्पन्न लोक अनेक  
विवाह कऽ लैत छलाह आ विपन्न  
लोक कुमार रहि जाइत छल। यदि  
कन्याक आधिक्य नहि रहैत तँ अवश्य-  
म्भावी छल जे जखन एक व्यक्ति  
सात सात आ ताहुँ अधिक विवाह  
करैत छल तँ बहुतो लोक कुमारे  
रहि जाइत। किन्तु ओह समयमे  
कन्या भार नहि प्रतीत होइत छलक।

सम्प्रति समाजमे कन्याक जन्म  
एक भार बनि गेल अछि। कुलमूलमे  
केहनो पैघ लोक होथु, यदि गरीब  
छथि तँ कन्याक जन्मक संगहि माथक  
दर्द सेहो जन्म लऽ लैत छनि। बेटा-  
बलाकेँ पाँचो आड, रघिउमे डुबल रहैत  
छनि। कन्यादानमे टका दान, रेडियो  
दान, घड़ी दान आदि अनेक दान  
एहि रूपेँ समाधिष्ट भेल चल जा  
रहल अछि जाहिसँ के ल कन्यादान  
करबाक उपाय रखनिहार व्यक्तिकेँ  
घोर संकटक अनुभव भऽ रहल छनि।  
एहन समयमे यदि क्यो एहि  
समय लोभलाभक त्याग कऽ अपना

# एहनो एहन लोक अछि

— श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' —

बालकक विवाह करा लैत अछि तँ  
ओ आदर्श व्यक्तित्व थिक, ओहि विवाह-  
केँ आदर्श विचारक कदमो जाइत अछि।  
समाजक विमर्श एहन व्यक्तिकेँ जेनेक  
धन्यवाद देल जाइनि से थोड़ होयतनि,  
महा समजो एहन गजबदीर अछि जे  
थोड़ो सन धन्यवाद देतनि से प्रवृत्ति  
नहि, पलखतिथिकेँ अभाव नहि।

हम एक एहन कन्याक पिता एवं  
एक एहन बालकक पिताक चर्चा करऽ  
चाहि रहल छी जे हमरा दृष्टिये  
आदर्श छथि। जे आदर्श तेँ अनुकर-  
णीय, तेँ धन्यवादार्ह।

एक कन्याक पिता जनिका कन्या-  
दान स्थिर भऽ गेलनि। बालकक  
पिता भावकतावश हिनक यश, प्रतिष्ठा  
क्रिया मर्यादाकेँ मरुत्व दऽ देलथिन,  
विवाहक खर्चक नमपर पाँच सय मात्र  
टाका लऽ लेलथिन, विवाहक तिथि  
निर्धारित भऽ गेलनि। कन्यागत  
तत्पन चलत जे हमरा आदर्श परिवार  
भेटि गेल तनि उल्लसमे वर-  
बर्नियातीक नीक स्वागत सत्कारक  
व्यवस्था कयलनि। आ सन्ध्यामे  
बरियाती औतनि, आडन, दलान,  
टोल-पड़ोस सब ठाम एक चहल-पहल  
विशेष उत्साहक विशेष समारोह।  
पेय तँ विभिन्न प्रकारक, पान तँ विभिन्न  
प्रकारक, मधुर तँ विभिन्न प्रकारक।  
लोक प्रतीक्षामे अछि, क्रमहि ओ  
प्रतीक्षा तीव्र होबऽ लागल आ अन्तमे  
घोर प्रतीक्षा कयलाक बाद एक दूत  
आयल, एक पत्र लेने। पत्रमे लिखल  
छल—क्षमा कयल जाय, वर विवाह  
करब स्वीकार नहि करैत छथि।  
टाका पत्रवाहक हाथे घुरा रहल छी,  
लऽ लेल जाय।

ओहि दूतकेँ भोजनभात कराय  
कन्यागत संवाद कहलथिन जे यदि  
हुनका टाकाक शान होइनि तँ हमर  
एहि व्यवस्थामे दू हजार टाका व्यय  
भेल अछि आ पचास हजारक मानहानि  
सेहो कयल जा सकैत छनि। तेँ से  
जोड़ि कऽ आपस कऽ देख नहि तँ  
ई पाँचो सय राखथ, एहिसँ दूनु  
बकती नीक-निकत खाथ पीबथ जे  
फेर एक टा बेटाक जन्म भऽ जाइनि।  
टाका सहित दूतकेँ आपस कऽ देलथिन।  
कन्यागतकेँ किछ लोक एहनो  
भेटलनि जे एहिम असहमति प्रकट  
करैत एहि काजकेँ बुद्धित्वक संज्ञा  
देलेकनि आ किछ लोक एहनो भेटलनि  
जे हिनक साहस त्याग ओ प्रतित्रियामे  
कयल गेल कार्यक हृदयसँ प्रशंसा  
कयलेकनि। हमरा जनैत बालकक  
पिताक मूँहपर एहन कडगर थापर  
दोसर प्रकारेँ नहि देल जा सकैत  
छलनि।

संगहि कन्यागत घोरणा कयलनि  
जे अब एहि जिलामे सम्बन्ध करबे  
नहि करब। जाहि जिलामे नीक लोक  
नहि रहैत हो, ताहि ठाम सम्बन्ध  
करब उचित नहि।

एही जिलामे एक एहनो बालकक  
पिता छथि जनिका सम्पूर्ण जिलाक  
हेतु ई घोषणा कलंकास्पद वृत्तना  
गलनि। ओ तीन बालकक पिता।  
कन्यागतकेँ समाद पठैलथिन जे एह  
जिलामे नीक लोक बसैत अछि,।  
यदि हुनका स्वीकार होइनि तँ हमर  
जेत बालक जे ए. ए. फाइनलमे  
पढ़ैत छथि, हुनका बिना कोनो शर्तक  
हम देबाक हेतु प्रस्तुत छियनि।  
आजुक युगमे एहन उदारता देखौनि-

हार व्यक्तिक प्रति आनो प्रकारक  
सन्देश कयल जा सकैत छनि। बालकमे  
कोनो अवगुण होइनि, दरिद्र होथि,  
कुलमूलमे कतहु दोष होइनि, परन्तु  
अद्भुत बात, बालक रूप गुण सम्पन्न,  
कुल उत्तम, निट्ठाह गृहस्थ, स्वयं  
विद्वान्। लक्ष्मी आ सरस्वती दुनूक  
अपूर्व सामंजस्य। अन्तमे कन्यागत  
साभार एहि प्रस्तावकेँ स्वीकार कऽ  
लेलथिन। सम्बन्ध भऽ गेलनि।  
वर-विदाइ, बात-व्यवहार, भारदोर  
आदि सब वस्तुक विलक्षणता देखि  
बालक ओ बालकक पिता संगहि  
समाजक लोक पूर्ण सन्तुष्ट।

तेसर वर्ष द्विरागमनक दिन स्थिर  
करबाक भेलनि। कन्यागत परदेशमे  
रहनिहार, परार्थीन। कन्यागतक  
इच्छा जे द्विरागमनक प्रसंग एतहि  
आबि परामर्श हो, परन्तु बालकक  
पिता गामपर विधिवत् नौआ, ब्राह्मण,  
डोर सिन्दूर, माछ दहीक भार पठबैत  
गेलथिन किन्तु कन्यागत ओहि दिनमे  
गाममे उपस्थित रहबासँ अक्षम।  
द्विरागमन होयबे टा करत। बालकक  
पिता अपना समधिक अक्षमता जानि  
दू दिन पूर्व बालककेँ एक हजार टाका  
संग कऽ दऽ, ई कहि विदा कयलथिन  
जे अब दूनु घरक मान मर्यादा,  
इज्जति, प्रतिष्ठा अपने थिक, यदि  
समधिकेँ गाम अयबाक पलखति नहि  
भेल होइनि आ इदाइ-विदाइमे कोनो  
त्रुटि वृत्तना जाय जाहिसँ एहि ठामक  
समाजमे छिद्रान्वेषण हो तँ तकर  
पूति एहि टाकासँ कऽ लेब।

की एहि प्रकारक उदारताक  
कल्पनो आजुक युगमे कयल जा सकैत  
अछि जखन कि कन्यागतक घरघरारी  
बेचयबाक हेतु वर ओ वरक पिता  
फाँड़ बन्हने रहैत छथि? ई कन्यादान  
१९६२ मे भेल छल। सुनल अछि जे  
उक्त पण्डित जी संकल्पे कऽ ललनि  
जे कोनो बालकमे टाका नहि गनायब।  
एहि वर्ष हिनक द्वितीय बालकक  
विवाह भेलनि अछि, ओहो एक  
निविष्ट विद्वानक कन्यासँ। समाजक  
कतिपय लोक पण्डितजीक एहि उदा-  
रताकेँ पण्डितजीक बुद्धताक द्योतक  
बुझैत अछि। बहुतो लोक तँ पण्डित  
जीसँ ईहो कहलकनि जे अपने आत्माक  
पवित्र लोक छी तँ अपनेकेँ लोक ठिक  
रहल अछि। अन्यथा अपने सन  
प्रतिष्ठित, सम्पत्तिवान, तथा बालक-

वर विनयक व वैवाहिक समस्याक आधारपर विगत तीस-  
चालीस वर्ष साहित्यिक क्रान्ति होत रहल अछि। वक्तेक साहित्यकार  
कलम घसैत घसैत आब बूट भऽ गेलाह किन्तु ई रोग प्रमशः बढ़िते  
गेल अछि, छुटबाक कोन चर्चा, अपितु आब ई चरम बिन्दुपर आबि  
गेल अछि।



आमके मर्त्यलोकक अमृत फल कहल गेल अछि । वसन्त ऋतुक आगमन होइते आम्रतर ऋतराजके अपन मज्जरस स्वागत करैछ ते संस्कृतमे एकरा 'वसंतदूत' कहल जाइछ । प्राचीन कालमे राजालोकनिके प्रजा द्वारा सनेसक रूपमे आम पठाओल जाइत छल किएक ते आमक एक

लोकनि एहन सुशिक्षित, अपने जे चाहितहुँ ते दस पाँच हजार टाका पयरपर कतेक कन्यागत दऽ जाइत । समाजमे जकरा बीघा दू बीघा भूमि छैक, बटा मँटिकमे पढ़ैत छैक सेहो पाँच हजारसँ कमपर गप्पे नहि करैत अछि ।

पण्डित जीक उत्तर छलनि जे हम पवित्र आत्माक यदि लोक छी ते हमरा सम्बन्धी पवित्र आत्माक संग करब उचित छल । समाने शोभते प्रीति: आ ते हम पवित्र आत्मा रखनिहार दुनू गोटा समधि कयलहुँ अछि । देखू, जेठ समधि द्विरागमनक दिन गामसँ अनुपस्थित रहलाह मुदा तथापि कन्याक विदाइमे कोनो त्रुटि रहल ? शारीरिक आभूषण, कपड़ा-लत्ता, वर्तन जात, कोच, आलमारी, टेबुल कुर्सी, ओछाओन विद्याओन, भारदोर कोन वस्तु हमरासँ नीक ककरो बालकके देलकनि अछि ।

एहने उदात्त चरित्रक लोकक समाजमे सम्प्रति प्रयोजन पड़ि गेल अछि । एहन कन्यादान जनिका माधपर छनि सह समाजक एहि विभीषिकाक अनुमान लगा सकैत छथि । आ एहन उदार चरित लोकसँ सम्पर्क भेला उत्तर एहन व्यक्तिवक मूल्यक अनुमान लगा सकैत छथि ।

वर विक्रयक एवं वैवाहिक समस्याक आधारपर विगत तीस चालीस वर्षसँ साहित्यिक क्रान्ति होइत रहल अछि । कतेक साहित्यकार कलम घसैत घसैत घाब बूढ़ भऽ गे । किन्तु ई रोग क्रमशः बढिते गेल अछि घटबक कोन चर्चा अपितु आब ई चरमबिन्दुपर आवि गेल अछि । यदि एहि दिशामे समाज गम्भीरतासँ नहि सोचलक ते ने जानि भविष्यमे एकर कोन प्रकारक कुपरिणाम समाजके भोगऽ पड़ैतक ।

मिश्रटोला, दरभंगा ।

## आम मर्त्यलोकक अमृत-फल

— श्री जयनारायण मिश्र —

संस्कृत पर्याय 'नृपप्रिय' एकर पुष्टि करैत अछि । मानवक कोन कथा ? सुग्गा, कोइली आदि पक्षीके सेहो आम प्रिय होइत अछि । संस्कृतक एकर अधिकांश पर्यायवाची शब्द एकरे सभक नामपर आधारित अछि, यथा— पिकवल्लभ, पिकप्रिय, पिकमहोत्सव, कोकिलबन्धु, कोकिलवास आदि । ई प्रायः सभ फलक अपेक्षा अधिक गुणकारी, उत्तम, बलदायक, रोगनाशक, कामशक्तिवर्धक एवं प्रिय होइछ ते प्राचीन कालक ऋषिलोकनि 'फलाधिराज' कहि एकरा सम्बोधित कयने छथि यथा—

“सन्तर्पणो यः सकलेन्द्रियाणां  
बलप्रदो वृष्यतमश्च हृद्यः ।  
स्त्रीषु प्रहर्षं प्रचरं ददाति  
फलाधिराजः सहकार एव ॥”

आम्र, चूत एवं सहकार, ई तीनू आमके संस्कृत पर्याय थिक मुदा एकर प्रयोग विशेष अर्थ बोधक छैक । पुष्परहित फलवला वृक्षके आम्र, फलरहित पुष्पित वृक्षके चूत तथा फल-फूल दुनूसँ युक्त वृक्षके सहकार कहल जाइछ । किएक ते—

“अपुष्य फलवानास्रः पुष्पितश्चूत उच्यते ।

पुष्यः फलंश्च संयुक्तः सहकारः  
स उच्यते ॥”

नाम—

संस्कृत—

आम्र, रसाल, सहकार, वसंतदूत, कामवल्लभ, चूत, नृपप्रिय, फलश्रेष्ठ, फलाधिराज, कोकिलबन्धु, कोकिलावास, पिकवल्लभ, पिकप्रिय, पिकमहोत्सव ।

मैथिली—

आम ।

हिन्दी—

आम ।

बंगला—

आम ।

मराठी—

आंबा ।

गुजराती—

अंबो, कैरिन झाड़ ।

अंगरेजी—

मँगो ।

लेटिन—

मँगिफेरा इन्डिका ।

आम सर्वप्रसिद्ध अछि ते एकर विशेष विवरण देब हम कोनो आवश्यक नहि बुझैत छी । एकर उत्पादन विश्वमे सभसँ अधिक भारतेमे होइत अछि । मिथिलांचल आमक लेल प्रसिद्ध अछि । दरभंगा जिलाक मलदह आम देशक कोन कथा, विदेशोमे प्रसिद्धि पावे अछि ।

आम मुख्यतया दू प्रकारक होइछ— कलमी आ बीजू । बीजू आमक आठिये रोपलासँ होइछ आ कलमी बीजमे गाछके कलमी आमक पातर ठारिमे बाहिले लगाओल जाइछ । कलमीमे मालदह, बम्ब, कृष्णभोग, कलकतिया फँजली, जर्दालू, सुकुल, मालभोग आदि उत्तम मानल गेल अछि । बीजमे गोपी, सिनुरिया, रोहिणीया, केरबा, मिरचैया, बड़वरिया, करि-अम्मा तथा दक्षिणी भारतक केसरिया, सेंदरी कारल, रबोचरे, शेवप्पा प्रसिद्ध अछि ।

ओना ते प्रायः सभ प्रकारक आम गप्पे ऋतुमे पकैत छैक मुदा एकर किछु एहनो जाति भेटैछ जे भादव अथवा आसिन मासमे पकैत अछि । एहन आमके 'भदैया' कहल जाइछ । कछु एहनो आम छैक जे बारहो मास उपलब्ध होइछ जे 'बरहमसिया' कहल जाइत अछि । किन्तु एहनो आम भेटैछ जे वर्षमे दू बेर फरैत अछि जकरा 'दूफसला' कहल जाइछ । ररही, बथुआ, कटिका, मीर जाफर आदि आम एही श्रेणीमे अबैत अछि ।

आमक प्रशंसा अनेक शास्त्र, पुरान, वैद्यक ग्रन्थ एवं आधुनिक चिकित्सा ग्रन्थमे कयल गेल अछि । देवपूजनमे कलश स्थापन कार्यमे एकरे

ठारि प्रयुक्त होइत अछि । संसारक कोनो दोसर फल रस, वीर्य आ वणमे पाकल आमक समता नहि कऽ सकैत अछि । ताहूमे विशेषता ई जे एकर फल सहज आ सुलभ मूल्यमे सबसँ उपलब्ध भऽ जाइत अछि । कतेको प्रयत्नसँ आमक एक गोटा गाछ 'लन्दनक दि इन्डियन एण्ड ईस्टर्न इगिस्ट कम्पनी' भारतसँ लऽ गेल । अनुसंधान कयलाक पश्चात् उक्त कम्पनी एक विज्ञप्ति निकालि ई जनौने छल जे आममे 'ए' 'सी' एव 'डी' विटामिन अत्यधिक पाओल जाइत अछि । एहि विद्यमान विटामिन 'ए' बाहरी विष एवं रोगक कीटाणुक प्रभावके रोकैत अछि 'विटामिन' 'सी' सभ तरहक चर्मरोग नाशक होइछ आ विटामिन 'डी' दाँत आ शरीरक समस्त अस्थिके बल प्रदान करैत अछि ।

अमेरिकाक अग्रगण्य डाक्टर विलसन बर्ड जोरदार शब्दमे स्वीकार कयने छथि जे आममे मखनसँ सय गुना अधिक पोषक पोषक तत्व विद्यमान रहैत अछि । आ परीक्षण द्वारा ई सिद्ध कयने छथि जे आमक उचित प्रयोगसँ शरीरक स्नायुविक जालके पूरा शक्ति भेटैत छैक, शुद्ध रक्त बहुत उत्पन्न होइत छैक तथा शारीरिक वृद्धि होइत छैक । भारतीय विद्वान पं. हकाम गंगा सहाय पाठक एक ठाम लिखने छथि जे आम शरीरके अतिशीघ्र शक्ति प्रदान करैत अछि तथा शरीरमे अतिशीघ्र रक्तवृद्धि करैत अछि । जे बयो शरीरके पुष्ट बनावऽ लेल उत्साहवर्धक औषधिक सेवन करऽ चाहैत छथि से एक बेर दूध आ आम कल्पक परीक्षा अवश्य करथु । जे लाभ ओलटाइन, ओकासा आ फेल्टुना, एतेक धरि जे अस्सी टके तोला मकरध्वजसँ नहि भेटि सकैछ ओ मात्र आम्रदुग्धकल्पक सेवनसँ प्राप्त होइछ । लैपटनेट डा. कर्नेल आर. एन. चोपरा लिखैत छथि जे आमक फल मृदुविरचक, मूत्रल आ संकोचक होइत अछि । एकर खाँइचा गर्भाशयक रक्तसाव, मुहसँ कफक संग शोणित रक्तसाव तथा रक्तमय इस्तमे उपयोग सिद्ध भेल अछि । एकर पात बीछबक दशपर लाभ करैत अछि ।

बंगला भाषाक सुप्रसिद्ध पत्रिका 'पुष्प पात्र' मे डा. सीलन लिखैत



## सेवक : आत्म-पारचय

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' :

हाय ! बाजू की ? बजलो ने जाय ।

कहबा ले' हमहूँ 'छी गृह-निर्माता  
ठीक रहय बाध भरिक खसरा ओखाता  
ठकने फिरै' छी नगर भरितैं यो वस कट्ठा सभ दिन बोहाय ।  
हमरो लग अछि सोहनगर गामे  
हमहूँ पुजाबी जा पुरखाक नामे  
अपनेसँ अप्पन प्रशंसा करै' छी, करितो ने मनुआँ अघाय ।  
हमरे बनौने बनय क्यो राजा  
हमरे बजौने बजै' अछि बाजा  
खाजा आ लड्डु परसि वै' छी अनका ताहीसँ अतमा जुड़ाय ।  
उज्ज्वल रहल सभ दिन इतिहासे  
एक साँझ आइ भने पड़ि जाइ उपासे  
आशमे पेट छुटल भऽ गेल बखारी भरितो सतत खलिआय ।  
कहब छी हम गृहए ससारक  
आइ भने खापरि बनी कंसारक  
तैं यो तैं लाड़निक मुँह झरकयबनि रखबनि कतेँ केँ उलाय ।  
हमही ली ठीका परक उपकारक  
अपना ले' रखने छी सम्प्रदानकारक  
दा धातुकेर हम प्रयोग ने सिखलहुँ तैं यो चली उधिआय ।  
दलित - पतितकेर हमहीं छी त्राता  
मन्त्र जपै' छी 'जय भारत माता'  
सेवाक नाम पर मेघा पबै' छी सेहो तैं बहुजन-हिताय ।  
छत्तिस गजकेर रखने छी अँतरी  
आँकि सकय नहि क्यो जन भितरी  
दुनियाँसँ माडि.-चाडि. कोठी भरै' छी, रखितो छी तकरा जोगाय  
हम की छी, से बुझथि नहि देबो,  
पारो उतारि जाइ, दी नहि खेबो,  
हमरे ले' अगिला माडी. सुरक्षित, नहि तैं दी नावो डुबाय ।  
बाबू की, बजलो ने जाय ।



# प्रजावर्गके पड़ल प्रयोजन

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' :

प्रजा - वर्गके पड़ल प्रयोजन  
अपनामे अपनैती चाही,  
भबै अगहनी चैती चाही,  
दूध दूध आ पानि पानि ले  
गामेमे पंचैती चाही ।

खेतक खेत पटौनी चाही,  
नहरिक नड.डिसटौनी चाही,  
फुर-फाँइमे उड़बऽ वाली  
धरनी नहि बिलटौनी चाही ।

सुन्दर स्वच्छ घरारी चाही,  
आ निष्पक्ष भँडारी चाही.  
काज कतेको पैघ रहय  
नहि लाम-काफ सरकारी चाही ।

मनी झड़य से बीया चाही,  
बुझा नहि बू तीया चाही,  
थोड़ो सन हो नीक-निकुत हो  
किमहु नहि 'ए छीया' चाही ।

बेटी नहि अगतीया चाही,  
बेटा नहि पछतीया चाही  
एकेटा हो, किन्तु अन्हारक  
घरमे जरइत दीया चाही ।

हृदय पबित्र पड़ोसी चाही,  
संयत कमला-फोसी चाही,  
देहक नापे वस्त्रक संगहि  
पेटक नापे चाही भोजन  
प्रजा - वर्गके यह प्रयोजन ।